The Rajput Policy of Akbar.

16वीं सदी की उत्तर-भारतीय राजनीति में राजपूत राज्यों का महत्वपूर्ण स्थान था। दिल्ली सल्तनत की कमजोरियों का लाभ उठाकर अजमेर, मेड़ता, गोंडवाना, रणथम्भौर, कालिंजर, मेवाड़, मारवाड़ जैसे सशक्त राजपूत राज्यों का उदय हुआ। बाबर, हुमायूँ और शेरशाह तीनों को इनसे संघर्ष करना पड़ा। अकबर के समक्ष भी राजपूतों से निबटने की समस्या उठ खड़ी हुई।

अकबर ने, जिसके व्यक्तित्व में उदारता एवं ~~अद्भुत~~ राजनीतिकपटुता का अद्भुत समन्वय था, राजपूतों की महत्ता का उचित मूल्यांकन किया। अकबर का उद्देश्य भारत में मुगल साम्राज्य की जड़ों को जमाना था। दूरदर्शी अकबर यह जानता था कि भारत में कोई भी साम्राज्य राजपूतों को मित्र बनाये बिना स्थायी नहीं रह सकता है। वह यह भी समझता था कि राजपूतों का सहयोग मिलने से उसे बहुसंख्यक हिन्दुओं का भी समर्थन भी प्राप्त हो जायेगा।

अकबर के गद्दी पर बैठने के समय तक भारत में मुगलों की सत्ता सुदृढ़ नहीं हो पायी थी। मुगलों को अभी भी विदेशी और लुटेरा ही समझा जाता था। राजपूतों की ~~मैत्री~~ मित्रता ~~[illegible]~~ प्राप्त कर अकबर बहुसंख्यक हिन्दुओं का समर्थन प्राप्त करना चाहता था जो नवस्थापित मुगल राज्य की सुरक्षा एवं सुदृढ़ता के लिए आवश्यक था। [राजपूताना के राजपूत राज्यों की भौगोलिक स्थिति के चलते भी अकबर इन पर नियंत्रण रखना आवश्यक समझा। बिना इन राज्यों को अपने प्रभाव में लिए राजधानी एवं अंततः पूरे साम्राज्य को सुरक्षित रखना कठिन था।]

दूरदर्शी एवं साम्राज्यवादी अकबर यह भी जानता था कि बिना इन राजपूत राज्यों को अपने प्रभाव में लिए साम्राज्य को ~~[illegible]~~ सुरक्षित रखना कठिन था। इन्हें अपना मित्र बनाकर अकबर अपने दो उद्देश्यों की पूर्ति एक ही साथ करना चाहता था - राजधानी की सुरक्षा एवं साम्राज्य का विस्तार। साथ ही साथ अकबर राजपूतों की वीरता एवं स्वामीभक्ति जैसी चारित्रिक गुणों को ध्यान में रखकर उनका सक्रिय सहयोग मुगल अमीरों की शक्ति पर अंकुश लगाने एवं

अफगानों तथा उजबेगों पर नियंत्रण स्थापित करने में लेना चाहता था। इसलिए अकबर ने राजपूतों के प्रति एक निश्चित नीति निर्धारित की। इसके अन्तर्गत उसने राजपूतों के प्रति उदारता, सहिष्णुता, सद्भावना, सहयोग एवं आवश्यकता वैवाहिक-सम्बन्धों की स्थापना एवं आवश्यकता पड़ने पर शक्ति प्रयोग की नीति अपनायी।

1562 ई. में अकबर ने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के मजार की यात्रा की। इस अवसर पर अम्बर (आमेर) नरेश बिहारीमल (अथवा भारमल) ने अकबर से भेंट कर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। बिहारीमल ने अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया। बिहारीमल को मनसब प्रदान किया गया एवं उसके पुत्र भगवानदास एवं पौत्र मान सिंह को भी मुगल सेना में स्थान दिया गया। इसके साथ ही मुगल-राजपूत सम्बन्धों की एक नई परंपरा आरंभ हुई। Dr. Beni Prasad ने इस विवाह के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "The marriage alliance symbolised the dawn of a new era in the Indian politics"

लेकिन राजपूतों के साथ मुगलों का यह वैवाहिक सम्बन्ध एवं अकबर की सम्प्रभुता मेवाड़ को मान्य नहीं था। उधर मुगलों के लिए मेवाड़ पर नियंत्रण करना व्यापारिक दृष्टि से भी अपेक्षित था। मेवाड़ के राणा ने मालवा के शासक बाजबहादुर को शरण देकर भी अकबर के क्रोध को भड़काया था। अतः 1567 में अकबर ने मेवाड़ के विरुद्ध प्रस्थान किया। एक लंबे संघर्ष के बाद 1568 में चित्तौड़ (मेवाड़ की राजधानी) पर अकबर का अधिकार हो गया। लेकिन राणा उदय सिंह द्वारा मुगलों का विरोध जारी रहा। उदय सिंह के पश्चात् राणा प्रताप ने अकबर से संघर्ष जारी रखा। 1576 ई० में अकबर ने मेवाड़ के नये शासक राणा प्रताप के विरुद्ध हल्दी घाटी की लड़ाई लड़ी। राणा प्रताप के युद्ध में पराजित होने पर भी अकबर का विरोध जारी रखा। अकबर के शासन-काल में मेवाड़ मुगल राज्यों के अधीन नहीं आ सका। फिर भी राणा प्रताप की हार से बून्दी, कोटा, डूंगरपुर, ओरछा आदि राज्यों में मुगलों

के आगे आत्म समर्पण कर दिया। रणथम्भौर एवं कालिंजर 1569 ई० के बाद ही अकबर के, इलाहाबाद-प्रयाग के कारण रणथम्भौर एवं कालिंजर ने इसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। बीकानेर एवं जैसलमेर के राजाओं ने अपनी कन्याओं का विवाह अकबर के साथ किया। इस तरह 1570 ई० तक राजपूताना का अधिकांश क्षेत्र अकबर के प्रभाव में आ चुका था।

अकबर की राजपूत नीति उदार थी। यद्यपि उसने राजपूतों के विरुद्ध साम्राज्यवादी नीति अपनायी तथापि प्रकृति से उदार एवं धर्म सहिष्णु होने के कारण अकबर ने राजपूतों और अंततः हिन्दुओं को अपने पक्ष में अपने पक्ष में मिलाने के लिए अन्य कार्य भी किए। सर्वप्रथम, उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। 1563-64 में अकबर ने हिन्दुओं पर लगाए गए तीर्थ कर एवं जजिया कर वापस ले लिया। जबरदस्ती हिन्दुओं के धर्म-परिवर्तन पर रोक लगा दिया गया। हिन्दू-समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। रामायण एवं महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया। फलतः लोगों ने विरोध का मार्ग छोड़कर मैत्री का मार्ग अपनाया। साथ ही अकबर ने राजपूतों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने के लिए उन्हें मुगल सेना एवं प्रशासनिक सेवा में बिना पक्षपात के पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया। स्पष्टतः है कि राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अकबर ने उनके साथ वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना अवश्य की, परन्तु यह शर्त अनिवार्य नहीं थी।

इस तरह अकबर की राजपूत नीति पूर्णतः सफल सिद्ध हुई और इसे अकबर की राजनीतिक प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। राजपूतों के सक्रिय सहयोग से अफगानों एवं उज़बेकों का सफाया हुआ, साम्राज्य का विस्तार हुआ और भारत में मुगलों को एक दृढ़ आधार प्राप्त हुआ।

अकबर की इस नीति से राजपूतों को भी लाभ हुए। राजपूताना के राज्यों पर अकबर का प्रभाव स्थापित होने से वहाँ शांति एवं सुव्यवस्था स्थापित हुई। फलस्वरूप

उस क्षेत्र में आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। साथ ही मुगल सेना में सम्मिलित होने से उनका सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति विस्तृत हुआ। शासक वर्ग के स्तर पर संघर्ष एवं टकराव के स्थान पर सामंजस्य एवं सहयोग की नई परम्परा की शुरुआत हुई। जिसके रचनात्मक प्रभाव भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पड़े। अतः विवाह रूपी ये अकबर की राजपूत नीति महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक सिद्ध हुई।